

September '16	09
5	12
6	13
7	14
8	15
9	16
10	17
11	18
12	19
13	20
14	21
15	22
16	23
17	24
18	25
19	26
20	27
21	28
22	29
23	30

October '16	10
1	4
2	5
3	6
4	7
5	8
6	9
7	10
8	11
9	12
10	13
11	14
12	15
13	16
14	17
15	18
16	19
17	20
18	21
19	22
20	23
21	24
22	25
23	26
24	27
25	28
26	29
27	30
28	31

August 2016

243-124  
Monday **29**

①  
8/7/20

B.A. + B.Ed.  
Part I  
हिंदी प्रयोग  
स्वरपाठ

श्री 3-10-11 के द्वारा  
प्रयोग विभाग  
हिंदी विभाग  
स्वयंसेवा केंद्र,  
गढ़वाल विश्व

स्वरपाठ का काल परिवर्तन - प्रभाव:

स्वर का लक्षण लक्षण प्रकाश नहीं है, बल्कि वाता कृष्ण की लक्षणों और प्रकृतियों का लक्षण है तो मात्र हृद्य की लक्षणों को है। अंतर्गत प्रकाश को है और मात्र-पितृ प्रकाश को है। इनमें संयोग और वियोग दोनों प्रकारों का लक्षण किया गया है।

वाक्यात्मक की तरह अंगार यों के स्वर एकदूसरे के साथ है। कृष्ण की विशेषता लक्षणों के लक्षण प्रकाश-प्रकाश की प्रकृतियों के साथ उनको प्रकृतियों को प्रकृतियों जितना लक्षणों और प्रकाशकारी लक्षण किया है वह अंगार प्रकृतियों है।

स्वर के काल में प्रभावों का आधुनिक महत्त्व है। उदाहरण के काल में विद्योक्त अंगार का चित्रण स्वरों की लक्षणों की प्रकृतियों अंगार का प्रभाव है। अंगारों की प्रकृतियों के लक्षणों अंगारों के प्रति उदाहरण का, अंगारों की लक्षणों के लक्षणों की प्रकृतियों की आधिक्य अंगारों विद्योक्त प्रकाश का चित्रण लक्षणों है।

स्वरों की प्रकृतियों की लक्षणों प्रकृतियों विद्योक्त प्रभाव लक्षणों है। अंगारों

हिंदी व्याकरण  
सुरदास का कवि  
पवित्र - कवि  
B.A. Board

July 16		August 16	
4	11 18 25	1	8 15 22 29
5	12 19 26	2	9 16 23 30
6	13 20 27	3	10 17 24 31
7	14 21 28	4	11 18 25
8	15 22 29	5	12 19 26
9	16 23 30	6	13 20 27
10	17 24 31	7	14 21 28

Important

लौकिकता को हम देश और काल की बनीका में  
बोधा नहीं सकते हैं। यह नार्थकालिक और  
नार्थ देशीय है यथा -

जिस दिन वास्तव में हमारे  
सदर बेहतर पालन-पोषण हुआ है,  
जब मैं बचका सिद्धांत

आव विचारों के अंगुष्ठ के अंगुष्ठ में बंधा है  
कृष्णता को किता है। विचारों की काली पक्षियों  
का पालन भी अब नैतिक है। ब्राह्मण-जिप  
आपके पद अविश्व का विचार पालन नहीं है।

सुरदास का कवि था। इनके  
पदों में अति का अंगुष्ठ सागर महान है।  
इनकी मालिका में लक्ष्मीभाचार्य की विचार  
का अंगुष्ठ पुष्टि-सागर मालिका की अंगुष्ठ  
मालिका है। कृष्ण अति मालिका के अंगुष्ठ  
में अंगुष्ठ अति मालिका के पौ पौ लका है।  
लक्ष्मीभाचार्य इनके अंगुष्ठ देता है। इनकी  
अति मालिका के अंगुष्ठ अंगुष्ठ आत्म-  
निर्देश का अंगुष्ठ मालिका है। इनके विचार  
के पद अंगुष्ठ: हृदय को अंगुष्ठ है। अंगुष्ठ  
की पुष्टि में अंगुष्ठ अंगुष्ठ अंगुष्ठ का पद  
अंगुष्ठ में अंगुष्ठ ही अंगुष्ठ अंगुष्ठ अंगुष्ठ है।

अंगुष्ठ के पदों में विभिन्न  
पार्श्विक और मालिका का पालन ही नहीं है।  
यह ही लक्ष्मीभाचार्य के अंगुष्ठ अंगुष्ठ अंगुष्ठ

September 16	09
1	12
2	13
3	14
4	15
5	16
6	17
7	18
8	19
9	20
10	21
11	22
12	23
13	24
14	25
15	26
16	27
17	28
18	29
19	30

October 16	10
1	3
2	4
3	5
4	6
5	7
6	8
7	9
8	10
9	11
10	12
11	13
12	14
13	15
14	16
15	17
16	18
17	19
18	20
19	21
20	22
21	23
22	24
23	25
24	26
25	27
26	28
27	29
28	30

(3)

8/7/20

August 2016

B.A. FLORA I

सुंदराना का कवि परिचय  
हिन्दी रूपण।

244-122

31

क्रमांक: Wednesday

प्रभावित है। ये काम, कौशल और माहिर इत्यादि  
को अतिरिक्त के यौन में वाचक मानते हैं। इनहीं  
गिणतियों का बंटवारा और बंटवारा का बंटवारा  
किया है।

नदी जाती है। नदी के पदों को जगहों की संख्या  
वांच्य बंध के दिना में जगहों में अपनी बंधों का  
ब-जाना चुन लिया। नदी बंधों को अपने  
आपना कर, उसे धन्य कर दिया।

बंध की माया धन्य माया है  
बंध की माया की सारसता, सदाभाविकता,  
प्रांजलता, प्रवाहमयता, प्रगाढ़ता इत्यादि की  
समाप्ति कोई कब नहीं बनकर है।

कुछ आज है पर कल नहीं रहेगी। पर कुछ कल  
नहीं है जो कल का है आज का है। और  
आने वाले कल में को जाने रहेगी। बंधुवदका  
सुख ही महाकवि यो। ये कल का है आज  
का है। और आने वाले कल में को अपनी  
सुखों के कावना। आज-जान के कंधेदार  
धन्य रहेगी।

2016

5-121

Thursday

प्रश्न 41

(4)

8/7/20

08 August '16				
1	8	15	22	29
2	9	16	23	30
3	10	17	24	31
4	11	18	25	
5	12	19	26	
6	13	20	27	
7	14	21	28	

09 September '16			
5	12	19	26
6	13	20	27
7	14	21	28
8	15	22	29
9	16	23	30
10	17	24	
11	18	25	

M  
T  
W  
T  
F  
S  
S

B.A. + B.Sc. Level I Important  
हिन्दी वचना

संस्कृत प्रश्नों के आगे लाकार है।

वचनसिद्ध प्रश्न  $1 \times 10 = 10$

- (1) वचनसिद्ध का आकार संज्ञा वचन है।
- (2) वचनसिद्ध का किञ्चन वचना है।
- (3) वचनसिद्ध किञ्चन वचना के उपासक है।
- (4) वचनसिद्ध किञ्चन वचना है।
- (5) वचनसिद्ध किञ्चन वचना का लकार किञ्चन है।
- (6) वचनसिद्ध का लकार लकार है या नहीं है।
- (7) वचनसिद्ध का किञ्चन वचना है।
- (8) वचनसिद्ध के उपासक वचनसिद्ध का लकार किञ्चन है।
- (9) वचनसिद्ध का लकार किञ्चन है।
- (10) वचनसिद्ध के लकार किञ्चन है या नहीं है।